REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 7 | APRIL - 2019

आझादी से पहले की गुजरात की सामाजिक स्थिति

डॉ.मानसिंहभाई अेम. चौधरी
आसि.प्रोफसर,
सरकारी विनयन कोलेज, सांतलपुर.

❊ प्रस्तावना :

प्राचीन काल में भारत 'सोने की चिडीया' कहा जाता था। यह सोनेरी चमक विदेशी लोगो के लिए आकर्षण का केन्द्र बना। इसीलिए विदेशी लोगो के आक्रमण के कारण भारत का अधःपतन होने लगा। अंग्रेजो के शासन में भारत की आर्थिक स्थिति खराब हो गई, लेकिन भारतीय लोग अपनी अलग संस्कृति के सु-संस्कारो का पालन करते रहे। गुजराती समाज में सामाजिक स्तर और दरज्जा प्रदान करती सबसे आगे रहती संस्था वह ज्ञातिप्रथा गिना जाता है।

१. ज्ञातिप्रथा :

भारत के दूसरे प्रदेशो की तरह गुजरात में भी ज्ञाति के हिसाब से इन्सान को होद्दा मिलता। जिस ज्ञाति में इन्सान जन्मे उस हिसाब से उसका मोभा, स्थान, भूमिका, फर्ज और अधिकार तय होते। गुजराती समाज में उपरी-नीचली ज्ञातियों की श्रेणी का संकुल शृखला का बना था। जिसमें ब्राह्मण टोच के स्थान पर और अस्पृश्य दलित ज्ञाति नीचे के स्थान पर थी। मुंबई इलाका के गेझेटियर में लिखा है कि -

''गुजरात मुख्यरुप से ज्ञातिजाति का प्रदेश है।''

''विमल प्रबंध'' में बताया है कि अढार वर्ण गुजरात के हिंदु समाज में अस्तित्व में थे। कवि श्री दलपतराम अपनी ज्ञाति के बारे के निबंध में ब्राह्मणो की ८४, क्षत्रियों की ९९, वेश्यो की ८४ और शुद्रो में धंधे के हिसाब से ५३ ज्ञातिओं का उल्लेख किया है।

२. बाल लग्न :

गुजरात में बाललग्न इस समय सामान्य बन गये थे। लड़कियों की लगभग ३ से ११ साल की उंमर में शादी कर दी जाती थी। तेरह वरस तक तो भाग्ये से ही कोइ लडकी कुंवारी रहती। नवलराम ने बाल लग्न के बारे में अपने एक पद्य में लिखा है कि हां रे नाम बाल लग्न का तो बोलो,

''बाललग्न का नाम सुनते ही आये मुझे कंटाला रे,
बाललग्न का दुःख देखकर देश हो गया काला रे।''

अढार के सैके में कवि कृष्णरामने लिखा है कि १०, ११, १२ साल की लडकीयाँ माता बनती। ऐसी माता और ऐसे बच्चों का भविष्य कैसा हो सकता है ?

३. विधवा विवाह :

बाल लग्न के परिणाम स्वरुप बाल मरण का प्रमाण बढने से समाज में बाल विवाह का विकट प्रश्न उपस्थित हो गया। विधवा पुनः लग्न के लिये कोई सोच भी नहीं सकता। करसनदास मूलजी जैसे समाज सुधारक इस दिशा में कुछ करने के लिए प्रयत्नशील थे। ई.स.१८६९-७० में कवि नर्मदाशंकर ने एक विधवा के साथ शादी की। इसके कारण उनको समाज के बहार कर दिया गया था।

४. दूधपीती का रिवाज :

१८-१९ वीं सदी में गुजरात में हिन्दु समाज में कन्या का जन्म आनंददायक मानने में आता नहीं था। बच्ची का बाप हंमेशा शर्म महसूस करता। बहोत-सी ज्ञाति में दहेज के कारण मा-बाप को बच्ची की शादी कराने में बहोत परेशानी होती। इसीलिए बहोत से मा-बाप बच्ची के जन्म के साथ ही दूध के गरम तपेले में डूबाकर मार डालते।

इस प्रथा के बारे में गेझेटियर के लेखक की नोंध है कि, 'इस प्रथा के कारण भरुच के पासे के गाँव में सेंकडो पुरुषो के बीच एक दरजन महिलायें भी न थी।'

५. सती प्रथा :

यह अमानुसी प्रथा गुजरात में थी। समाज में सती के बहाने अनेक बाल विधवाओं का अग्निस्नान कराया जाता था। इस प्रथा के सामने बंगाल के राजाराम मोहनराय ने बंड जगाया। उसकी असर धीरे-धीरे गुजरात में हुई। गुजरात के सुरत शहर में नागरी ज्ञात में शिवबाई नामक एक स्त्री थी। भरुच में सुंदरबाई और दिवालीबाई देसाइ सती हुई थी। उपरांत सौराष्ट्र, कच्छ और उत्तर गुजरात के अनेक जगहों पर सती के पालिये मिलते है।

६. अस्पृश्यता :

भारत के अन्य प्रदेशो की तरह गुजरात में भी अस्पृश्यता के बारे में चोक्कस ख्याल ज्यादा प्रमाण में फला हुआ था। समाज के छूआछूत के नियम बहोत सख्त थे। दलित वर्ग में भी काम के प्रमाण ढेड, वणकर, चमार, भंगी आदि वर्ग उच्च नीच के भेद थे। दलितो के लिय पानी लेने की अलग व्यवस्था तथा मंदिर प्रवेश के लिये उनको मनाई थी।

इस दिशा में सबसे पहले सयाजीराव गायकवाड ने अस्पृश्यता निवारण की प्रवृत्ति को वेगवंती बनाई। गुजरात में इस समय में सामाजिक क्रांति लाने के लिये दुर्गाराम महेताजी, दादोबा, दलपतराम, दामोदरदास और दिन मणिशंकर यह 'पांच दादा' और 'तीन नन्ना' नर्मदाशंकर, नवलराम और नंदशंकर ने समाज सुधारणा के इतिहास को अमर बनाया।

१९४७ तक अलग-अलग रजवाडा और ब्रिटिश सरकार ने अनेक सामाजिक कायदे पसार किये लेकिन इस कायदों का फल फौरन नहीं मिला क्युंकि सामाजिक परिवर्तन बहोत धीरे धीरे आता है।

❊ पादटीप :

- (डॉ.) देसाइ नीरा. अ., ''गुजरात में उन्नीसवी सदी में सामाजिक परिवर्तन'', युनिवर्सिटी ग्रंथनिर्माण बोर्ड, अहमदाबाद, १९९८
- शास्त्री हरीप्रसाद गंगाशंकर और परीख रसिकलाल छोटालाल (संपादक), ''गुजरात के राजकीय और सांस्कृतिक इतिहास'', ब्रिटिशकालीन, ग्रंथ-८, १९८४
- (डॉ.) नवीनचंद्र आ. आचार्य, ''गुजरात का सोलंकी कालीन इतिहास'', युनिवर्सिटी ग्रंथनिर्माण बोर्ड, अहमदाबाद, १९७३
- शास्त्री हरिप्रसाद गंगाशंकर और परीख रसिकलाल छोटालाल (संपादक), ''गुजरात का राजकीय और सांस्कृतिक इतिहास'', सल्तनतकाल ग्रंथ-५, १९७७
- प्रजापति मणिभाई और खमार महेन्द्र पी. (संपादक), ''पाटण की श्री और संस्कृति'', पाटण
- वाघेला बी.जी., ''भगवान स्वामीनारायण का समकालीन लोक जीवन'', स्वामी नारायण अक्षर पीठ, अहमदाबाद, १९९७

डॉ.मानसिंहभाई अेम. चौधरी
आसि.प्रोफसर, सरकारी विनयन कोलेज, सांतलपुर.

LBP PUBLICATION